ा इस पुस्तिका को पढ़ने के पश्चात दूसरों को भी दीजिये।

संसार का क्या होने जा रहा है ?



कृपया इस पुस्तिका को पढने के पश्चात दूसरों को भी दीजिये।

संसार का क्या होने जा रहा है ?

What's the World Coming to ?

HINDI

अतिरिक्त प्रतियां निम्न पते पर मंगाई
जा सकती हैं —

Maranatha Revival Crusade,
94–E, Sarojini Devi Road,
Secunderabad, A.P. 500003.

इस पुस्तिका की कोई खास कीमत निर्धारित नहीं की गई है।
स्वेच्छा दानों द्वारा इसके खर्च को और डाक खर्च को पूरा
किया जाता तथा और अधिक प्रतियाँ छापने में बड़ी
सहायता मिलेगी

Printed and Published by Maranatha Revival Crusade,
at 94-E, S D. Rd., Secunderabad–India.

संसार का क्या होने जा रहा है?

शायद आपने यह प्रश्न अपने आप से कई बार पूछा होगा (इन दिनों मे सभी यह प्रश्न पूछते हैं) इसमें आप का कोई दोष नहीं है। आप अपने समाचार पत्रों को उठाईये — तो मालूम होगा कि संसार संकटों में पड़ा है और अव्यवस्था के अधीन है। यदि आप अपना रेडियो या टेलिविजन लगायें तो फिर वही गहरी उलझा देनेवाली जटिल समस्याएं सुनने में आएंगी।

केवल सामान्य मनुष्य ही नहीं जिसे संसार की परिस्थितियों व घटनाओं की चिंता है। कई राजनैतिक नेता भी संसार कि बढ़ती हुई जटिल समस्याओं के कारण हतीत्साहित व असमंजस मे पड़े हैं। वैज्ञानिक भयभीत हैं. कृषक आशाहीन हैं. अर्थशास्त्री व परिस्थिति विज्ञान या इकोलॉजी के वैज्ञानिक हमेशा से ही सत्यानाश के अंतिम दिन की भविष्यवाणी करते रहते हैं। हमारे साम्हने मुद्रास्फीति की समस्या है, आर्थिक ससस्या है, खाद्य संकट, हिंसात्मक उग्र लहरों का बार बार आना, नशीली स्वापक गोलियां खाने का व्यसन, युद्ध सामग्री का संचय, मध्य पूर्व में सतत युद्ध, संसार के कई भागों में युद्ध छिड़ने की सम्भावना, व हर समय अणु शस्त्रों से विश्व व्यापक विध्वंस हो जाने की आशका है। फिर विचारों में व सिद्धातों में विरोध व नैतिकता का पतन। इस जमाने की एक और गन्दगी यह भी है अर्थात काम विकृति और अश्लील साहित्य व हत्या के विषय सफाई देकर उन्हें दोषमुक्त सिद्ध करने के लज्जा जनक प्रबन्ध भी है।

जी हाँ, यह एक उचित प्रश्न है। कि संसार किस दिशा की ओर बढ़ रहा है? कई लोग इस प्रश्न को पूछते हैं, फिर अपना सिर हिलाते है क्योंकि वे उत्तर पाने की आशा भी नहीं करते। परन्तु एक उत्तर है। वह कोई व्यक्तिगत अनुमान व भविष्यवाणी नहीं है, परन्तु यह उत्तर पवित्र शास्त्र में ईश्वर द्वारा प्रगट की हुई भविष्यवाणी में पाया जाता है।

कई लोगों को यदि इस सत्य को, अर्थात संसार किस ओर बढ़ रहा है, बताया जाय, तो वे उसे सुनना भी पसंद नहीं करेंगे उन्हे यही अच्छा लगता है कि वे भविष्य की बातों से अनभिज्ञ रहें, परन्तु हमारे लिए जरुरी है कि हम सत्य को जानें और तैयार रहें — क्योंकि यह जीवन व मृत्यु का प्रश्न है।

सत्य तो यह है कि संसार न्याय की ओर अग्रसर हो रहा है। ईश्वर ने इस जग को नहीं छोड़ दिया है। उसने न तो अपना सिंहासन त्यागा है और न इस सृष्टि का शासक होने का अधिकार छोड़ दिया है। यद्यपि इस समय संसार

में होने वाली कुछ भयंकर घटनाओं को उसने घटने दिया है तौभी वह इस संसार में दुष्टता हमेशा सहन न करेगा। वह शीघ्र ही इस भयंकर परिस्थिति को अपने हाथ में लेगा और संसार का न्याय करेगा। यदि कोई विषय है जिसे आज लोग पसंद नहीं करते, तो वह है — न्याय।

इस सम्भावना के बारे में कई लोग ठट्ठा उड़ाते हैं कि ईश्वर इस संसार का न्याय करेगा। कुछ लोग हैं जो उसकी अवहेलना करते और उसके विषय कुछ भी नही सुनना चाहते हैं। वे सोचते "जब समय आयेगा तब देखा जायेगा"।

अवश्य यह कोई मनोरंजन का विषय नहीं है। चूंकि विश्व व्यापी न्याय होना अनिवार्य है। हमें केवल उसका सामना ही नहीं करना चाहिये परन्तु उससे बचना भी चाहिए इतिहास में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्यों व राष्ट्रों का कई बार न्याय करके उन्हें "दण्डाज्ञा" दी है, जैसे कि उसने पूरे संसार को एक महान जलप्रलय से नष्ट कर दिया; आग और गन्धक से सदोम और अमोरा के शहरों को नष्ट किया; व मिस्री सेनाओं को लाल समुद्र में नष्ट किया, उसने यरुशलेम के नगरों पर दण्डाज्ञा दी और उन्हें बाबेल द्वारा उजाड़ कर दिया गया; उसने नबूकदनेसर, मीड़ो के राजा दारियेस व महान विजेता सिकंदर के ऊपर भी दण्ड़ाज्ञा दी; बाद में रोमी साम्राज्य पर भी दण्ड़ाज्ञा भेजी, आधुनिक समय में उसने कुख्यात एडोल्फ हिटलर का भी न्याय किया।

इन सब बातों को देखते हुए हमें फिर क्यों ऐसा सोचना चाहिये कि यह असंभव बात है कि ईश्वर एक बार पुनः इस जग की गन्दगी को निकालकर उसे शुद्ध करेगा।

जरूर वह इसे शुद्ध करेगा व इस आधुनिक व्यभिचारी व मूर्तिपूजक युग को, इस वर्तमान विलास प्रिय एवं अपने स्वयं का दुरुपयोग व दुर्व्यवहार करने वाली हिंसात्मक प्रवृत्तियों से भरी हुई विधर्मी पीढ़ी का वह न्याय क्यों न करेगा?

हमारे अखबार की खबरें चीख कर बता रही हैं कि हमने परमेश्वर को त्याग दिया है और कि हम अपने समाज में ईश्वर से या तो बहुत थोड़ा अथवा बिलकुल भी संबंध नहीं रखना चाहते हैं। हमें यह कतई पसंद नहीं कि ईश्वर हमारे जीवनों में किसी प्रकार से हस्तक्षेप करे या वह हमें अपने आदेशों पर चलाये। हमने ईश्वर को अपने व्यवसाय के कार्यों से अलग करके उसे अपने घर की ताक पर घर दिया है। हम कहते हैं कि हमें इन दिनों में ईश्वर की आवश्यकता ही नहीं है। हम अपने आप को सभ्य राष्ट्र समझते हैं व सोचते कि हम बहुत कुछ प्रगति कर चुके हैं। यद्यपि हम स्वीकार कर लेते हैं कि ईश्वर का इस जग को आरंभ करने में कुछ भाग रहा होगा परन्तु हम विश्वास ही नहीं कर सकते कि [illegible] अंत करने में भी कोई भाग होगा।

हमारे ज्ञान का इतना विस्तार हो चुका है कि अब ऐसी कोई बात नहीं है जो हम नहीं जानते या शीघ्र ही जिसकी खोज नहीं करेंगे। हम में यह घमंड है कि हम में इतनी क्षमता है कि हम अपने वातावरण को भी नियंत्रित कर सकते और कि हम अपने जीवन के स्तर को स्वयं निश्चित कर सकते व हम अपने कारोबार का निर्देशन स्वयं कर सकते हैं। हमें निश्चित कोई आवश्यकता नहीं है कि ईश्वर हमें बताये कि हमें क्या करना चाहिये और हमारा कोई इरादा नहीं कि हम किसी पुस्तक द्वारा प्रभावित हो जायें, भले ही वह अपने को ईश्वर का शब्द होने का दावा भी क्यों न करती हो।

संसार आज जिस स्थिति में है, वह इसलिये है, कि हमने उसे वैसा बना लिया है। हमने क्रूरता के नये अविष्कारों को कई गुणा बढ़ा लिया है। हम कहते हैं "हर व्यक्ति, अपने लिये है" और फिर अपना हृदय गरीबों के प्रति कठोर कर लेते हैं। हमने अपने जीवन का एक सिद्धान्त बना लिया है और वह यह कि हम अपने आप से अपनी सारी शक्ति से प्रेम करते व जितना मिल सके सब प्राप्त करें और जब तक संभव हो सके, तबतक सब बातो का आनंद लूटें चाहे बाकी आसपास के लोग जायें नरक व भाड़ में"

सुनिये परमेश्वर यहेजकेल ७:४ में क्या कहता है:

"और ईश्वर ने उससे कहा, इस यरुशलेम नगर के भीतर इधर उधर जाकर जितने मनुष्य उन सब घृणित कामों के कारणं जो उसमें किए जाते हैं, सांसें भरते और दुख के मारे चिल्लाते हैं उनके माथों पर चिन्ह कर दे"। यहेजकेल ९:४.

मेरे पाठकों में से कितने हैं, जो उनके देश में घटनेवाले घृणित कामों के कारण दुखित है? क्या परमेश्वर अपना चिन्ह आप पर लगा सकता है? या क्या आप अपने आसपास होने वाले घृणित कामों से ऐसे आदी हो गये हैं कि अब उन्हें देखकर आप को कोई धक्का नहीं पहुँचता? हम में से कितने हैं जिनकी आत्मा रात दिन देश में होने वाले अत्याचार, उग्रता, हिंसात्मक कार्य, व्यभिचार तलाक, गर्भपात, अश्लील साहित्य, समलिंग कामुकता से संतप्त हैं? क्या इस तरह सब देशों में फैली हुई दुष्टता की दुर्गन्ध परमेश्वर के नथुनों तक पहुँचती?

अब कितनी देर तक परमेश्वर न्याय को रोक कर रखेगा? जी हाँ उसने दण्ड को इसलिए रोक कर रखा है क्योंकि वह सहनशील व दयालु परमेश्वर है और वह नहीं चाहता कि कोई नाश हो जाये, परन्तु परमेश्वर मनुष्य से हमेशा वाद विवाद करता न रहेगा। न्याय आ रहा है।

परमेश्वर संसार का न्याय कैसे करेगा?

पवित्र शास्त्र बाईबिल में इसकी भविष्यवाणी कई जगह पाई जाती है — उसे महान विपत्ति का समय कहा गया है। एक ऐसा दिन जिसमें घोर अन्धकार

व उदासी भरी हुई है। मलाकी (बाईबिल के पुराने नियम की अंतिम पुस्तक) में उसे वह दिन कहा गया है जिसमें यह संसार जल जायेगा। वह प्रभुका दिन है। प्रकाशित वाक्य (बाईबिल की अंतिम पुस्तक) में अधिकतर उस अंतिम समय के विषय में ही बहुत्र लिखा गया है। और इस पुस्तक में न्याय के दिन को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के क्रोध का भयंकर दिन कहा गया है।

न्याय का समय सात वर्ष का होगा। जैसे कि लोग कल्पना करते कि वह केवल थोड़ी तकलीफ व सताव का समय होगा, परन्तु ऐसा नहीं हैं। वह जैसे हमारे प्रभु यीशु कहते हैं, "उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ और न कभी होगा"। इस क्लेश के समय से अधिक भूतकाल में कभी कोई क्लेश का समय इतना भयंकर नहीं हुआ, जो कि पूरे संसार को घेर लेगा, व ऐसा कोई राष्ट्र, या दूर स्थित एक भी छोटा द्वीप न होगा जो इस से बच जायेगा। प्रत्येक राष्ट्र व प्रत्येक वर्ग, वा प्रत्येक मनुष्य का न्याय होगा। और वे सब परमेश्वर के क्रोध से गिराये जायेंगे।

परमेश्वर के वचन के आधार पर मैं आपको बताना चाहता हूं कि क्लेश के ये सात वर्ष पिछले सब क्रूर समयों से कहीं अधिक भयंकर होंगे। मिश्र देश की प्राचीन काल की गुलामी से या प्राचीन अश्शूर व रोमी देशों की बर्बरता से कही अधिक संत्रस्त करनेवाला समय होगा। हिटलर के तानाशाही से व दूसरे विश्व युद्ध के कत्ल से कहीं अधिक भयंकर होगा। नूह के समय के जल प्रलय से भी भयंकर होगा परन्तु उसका वही परिणाम होगा — अर्थात संसार की अशुद्धता व विकृति निकाल दी जायेंगी और दुष्ट लोगों का भी अंत होगा।

क्लेश की विशिष्टिता प्राकृतिक विपत्तियाँ होंगी और यह विपत्तियां इतनी बड़ी होंगी कि सब जान जायेंगे कि वे परमेश्वर की ओर से हैं। भूकम्प प्रचंड आन्धी और तूफान, सूखा, महामारी, न अनिष्ट ये सब होंगे। इन सब विपत्तियों का हम अभी हाल में अनुभव कर ही रहे हैं। परन्तु हम जो अभी चख रहे हैं, वह केवल उस कड़वाहट का पहला स्वाद है, जो आनेवाला है। ये घोर विपत्तियां दण्डाज्ञाओं का एक भाग होंगी।

तीसरा विश्व युद्ध

परमेश्वर दुष्ट मनुष्य का भी उपयोग करेगा और परमेश्वर की ही अनुमति से वे दुष्ट दूसरे मनुष्यों पर दण्ड देने के साधन होंगे। युद्ध के कारण पृथ्वी का विनाश होगा। क्लेश के समय के लिये एक विश्व युद्ध की भविष्यवाणी की गई है और कहीं कहीं ऐसी भाषा लिखी गई है, कि उससे मालूम पड़ता है कि अणु-शस्त्रों का उपयोग किया जायेगा। हमारे आय० सी० बी० एम०, व एम० आय० आर० वी०, व और भी भयानक बायो केमिकल शस्त्रों का उपयोग किया जायेगा

जिससे पृथ्वी के बड़े बडे भागों में विष फैल जायेगा और वे जगह दूषित हो जायोंगी।

परन्तु प्रभु के रोकनेवाले हाथ को धन्यवाद हो कि पूरे संसार का विध्वंस नहीं होगा। प्रभु यीशु ने कहा कि वह काल कम कर दिया जायेगा क्योंकि यदि वह कम न किया गया तो एक भी प्राणी जीवित नहीं रहेगा।

विश्व युद्ध के पश्चात अकाल और मरी इस पृथ्वी को घेर लेगी, जिससे एक चौथाई अर्थात कम से कम एक अरब जन संख्या नष्ट हो जायेगी। खाद्य सामग्री इतनी कम हो जायेगी कि यशायाह ९:२० की भविष्यवाणी के अनुसार लोग अपनी ही भुजाओं का मांस खायेंगे। जीवित रहने के प्रयत्नों में जंगली जानवर मनुष्यों पर आक्रमण करेंगे। गुनाह, हिंसा, लूटमार बलात्कार व स्वापक गोलियों का नशा यह सब इस समय से उस समय में कहीं अधिक होगा।

सृष्टि के उथल पुथलसे महा परिवर्त्तन।

भविष्यवाणियां हमें बताती हैं कि संसार की सब नदियां व समुद्र इतने विषैले हो जायेंगे कि उसमें लाखों लोग नष्ट हो जायेंगे। इस पृथ्वी पर इतना अधिक उथल पुथल होगा कि उसका असर सारी पृथ्वी पर होगा। लिखा है कि इस पृथ्वी पर तारे गिरेंगे —हो सकता है, यह उल्काओं के विषय में लिखा होगा, या यह भी सम्भव है कि अणुशस्त्र पुनः पृथ्वी के वायु मंडल में प्रवेश करेंगे। योएल नबी ने भविष्यवाणी की कि आकाश व पृथ्वी में अद्भुत बातें होंगी जैसे रक्त व अग्नि, व धुएं के खम्भे। उस समय सूरज अन्धकार हो जायेगा और चांद का रंग रक्त के समान लाल हो जायेगा। प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में हमें यह बताया जाता है कि सूरज की इतनी भीषण गर्मी होगी कि पृथ्वी झुलस जायेगी और सब मनुष्यों के शरीर घृणित असाध्य घातक फोड़ो से भर जायेंगे।

ये विपत्तियां, उन क्लेशों के जो परमेश्वर पृथ्वी पर उण्डेलेगा, केवल एक भाग होगीं। मनुष्य परमेश्वर की निंदा करेंगे परन्तु वे पश्चाताप नहीं करेंगे। कई आत्मा हत्या का सहारा लेंगें। सुनिए इस भयानक भविष्यवाणी को जो प्रत्यक्ष प्रकाशित वाक्य के छठवें अध्याय की बारहवीं से सथवीं आयत में हमें मिलती है.

"और जब उसने छठवीं मोहर खोली तो मैं ने देखा कि एक बड़ा भुईडोल हुआ और सूर्य कम्मल की नाई काला, और पूरा चन्द्रमा लोहू का सा हो गया और आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आन्धी से हिलकर अंजीर के पेड़ में से कच्चे फल झड़ते हैं। और आकाश ऐसा सरक गया जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है और हर एक पहाड़ और टापू अपने अपने स्थान से टल गया। और पृथ्वी के राजा और प्रधान और सरदार और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास, और हर एक स्वतन्त्र, पहाड़ों के खोहों में और चट्टानों में जा

छिपे। और पहाड़ो और चट्टानों से कहने लगे कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने के प्रकोप से छिपालो क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक दिन आ पहुंचा है, अब कौन ठहर सकता" ?

खीष्ट विरोधी

सात वर्ष के क्लेश के काल में एक प्रधान मनुष्य का प्रभुत्व होगा जिसे हम खीष्ट विरोधी के नाम से जानते हैं। उसे पाप का मनुष्य, सर्वनाश का पुत्र और वह पशु भी कहा गया है। वह एक आकर्षक व शक्तिशाली मनुष्य होगा परन्तु वह शैतान का मनुष्य होगा और स्वयं शैतान से उसे सामर्थ्य प्राप्त होगी।

खीष्ट विरोधी परमेश्वर का शत्रु होगा और उसे क्लेश के सात वर्ष के दूसरे भाग में सम्पूर्ण संसार पर शासन करने की अनुमति दी जायेगी। उसकी तानाशाही ऐसी भयानक होगी कि संसार में आज तक कभी नहीं हुई। हिटलर के समान वह करोड़ो यहूदियो पर अत्याचार करेगा व उन्हें खत्म करेगा। परन्तु केवल यहूदी ही नहीं वह पूरे संसार के उन सब व्यक्तियों को भी नष्ट करेगा जो उसके प्रति वफादार न होंगे और जो उसकी राजभक्ति व स्वामिभक्ति नहीं करेंगे.

अरमागिदोन का युद्ध

उसके आतंक व संत्रास से भरे हुए शासन का अंत अरमागिदोन के युद्ध में होगा। यह युद्ध क्लेश के सात वर्ष के अंत में होगा, जब प्रभु यीशु खीष्ट अपने शक्तिशाली स्वर्ग दूतों के साथ अपनी महिमा व शक्ति में स्वर्ग से उतर आयेंगे। इन सातों भविष्यसूचक वर्षों के दौरान परमेश्वर इस संसार की जन संख्याको घटायेगा। सब का न्याय होगा क्यों कि यह क्लेश का समय न्याय का, दण्डाज्ञा का व शुद्ध करने का समय होगा; वह एक ऐसा भयानक डरावना समय होगा कि कोई भी व्यक्ति जो जरा भी बुद्धि रखता हो वह जान बूझकर उसे सहने के लिये तैयार न होगा, फिर भी इस आधुनिक पीढी के करोड़ों बल्कि अरबों लोग बेधड़क इस क्लेश के समय में पहुंच जायेंगे, क्यों कि यह क्लेश दूर भविष्य मे नहीं होनेवाला है बल्कि निकट भविष्य में, वह किसी भी दिन आरंभ हो सकता हमारे आसपास हम उसकी तयारी देख ही रहे हैं।

क्या हम आनेवाले क्रोध से बच सकते हैं ?

स्वाभाविक है कि हमारे मन में यह प्रश्न उठे कि "हमारे लिये क्या आशा है" क्या हम इस आनेवाले क्रोधसे बच सकते हैं ? सम्पूर्ण संसार के लिये साधारणतः न तो कोई आशा है और न बचने का कोई उपाय है। सर्वनाश का दिन

सन्निकट है। हमारी दुष्टता व घृणित कामों ने उसको निश्चित तय कर रखा है। परन्तु उन व्यक्तियों के लिये जो परमेश्वर के शब्द को सुनकर अपने दुष्ट कामों से पश्चाताप करके अपनी अशुद्धता को दूर करते हैं उनकेलियं न केवल आशा ही है परन्तु पूर्ण मुक्ति व आनेवाली दंडाज्ञा व न्याय से छुटकारा भी है।

यह छुटकारा ही शुभ संदेश है जो हम आप के साथ बाँटना चहते हैं। यदि कोई आशा ही नहीं है तो अच्छा हो कि हम न्याय की चर्चा ही न करें परन्तु छुटकारा इस सच्चाई में है कि परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु खीष्ट पुनः आ रहे हैं।

जी हां प्रभु यीशु शीघ्र वापिस आ रहे हैं

कई लोगों का यह विचार, कि यीशु खीष्ट इस आधुनिक जग में पुनः लौट कर आयेंगे, विलक्षण मालूम पड़ता है। वे कल्पना करते कि खीष्ट का दूसरा आगमन भ्रान्ति है। परन्तु यह भविष्यवाणी बाईबिल की है जो उसमें शुरु से अंत तक कई बार जोर देकर दोहराई गई है कि ईश्वर इस दुनिया के कारबार में आकर हस्तक्षेप करेंगें। इस विचार का आज कई लोग मजाक उड़ाते और इसलिये पूछते" उसके आने की प्रतिज्ञा का क्या हुआ ?"

खीष्ट के द्वितीय आगमन की प्रतिज्ञा बाइबिल में तीन सौ बार की गई, और कम से कम १,८४५ बार उसके विषय लिखा गया है। पहला भविष्यद्वक्ता जिसने दूसरे आगमन के विषय में कहा था वह हनूक था, जो नूह का परदादा था। पुराने नियम के कई लेखकों ने इस विषय में भविष्यवाणी की थी और स्वयं प्रभु यीशु ने अपने वापिस लौटकर आने की प्रतिज्ञा यूहन्ना १४:२-३ में इस प्रकार की थी।

"मेरे पिता के घर मे बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मै तुम से कह देता क्योंकि में तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं और यदि मैं जाकर तुम्हारे लियें जगह तंयार करुँ तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहा में रहूं वहां तुम भी रहो"।

अब प्रश्न यह उठता है कि प्रभु-क्यों इस संसार में वापिस आ रहे हैं। जैसे जैसे आप भविष्यवाणियों का अध्ययन करेंगे तो आप पाएंगे कि उनके आने के दो मुख्य कारण हैं।

१) पहला कारण यह है कि इस संसार से वे अपने लोगों को छुटकारा देने व उन्हें उठा लेने के लिये आयेंगे।

२) दूसरा कारण यह कि इस संसारको उसकी दुष्टता से शुद्ध करने के लिये वे आयेंगे। प्रत्येक जो इस संदेश को पढ़ता है और जो प्रभु के आने के

नियुक्त समय पर जीवित हैं उसका या तो उठा लिया जाने में या शुद्धिकरण में भाग होगा। यह एक वास्तविक सत्य है।

वह छुटकारा

वह स्थानान्तरण या बादलों पर प्रभु के साथ हवा में मिलना या चुने हुए लोगों का चुम्बक की तरह उठा लिया जाना पहले होगा।

क्लेश अरंभ होने से पहिले प्रभु अपने लोगों को इस जग से उठा लेगा जैसे कि हम १ थिस्सलुनिकियों ५:९ में पढ़ते हैं "क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं परन्तु इसलियें ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें। प्रभु यीशु ने अपने लोगों को प्रतिज्ञा दी है।

"तू ने मेरे धीरज के वचन को थांभा है। इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूंगा जो पृथ्वी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे संसार पर आनेवाला है" (प्रकाशित वाक्य ३:१०) यह उठा लिया जाना किस तरह से होगा? पौलुस प्रेरित हमें बताते हैं कि वह कैसा होगा।

"क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे। उन के साथ बादलों पर उठा लिए जायेंगे कि हवा में प्रभु से मिलें और इस रीति से हम, सदा प्रभु के साथ रहेंगे। (१ थिस्सलुनिकिया ४:१६-१७)

यह बिलकुल स्पष्ट है कि यह उठा लिया जाना कोई आत्मिक उत्थान या मृत्यु के बाद हमारी आत्माओं का ऊपर उठा लिया जाना नहीं है। जब यीशु आयेंगे तो हम बादलों पर हवा में उठा लिये जायेंगे और उसके बाद तुरन्तु ही हम आत्मिक राज्य में प्रवेश करेंगे, जहां हमारे पिता का भवन है। हम उन भवनों में जायेंगे जो प्रभु हमारे लिए अभी इसी समय तैयार कर रहे हैं। बादलों पर उठा लिये जाने में सब नये जन्म पाये हुए विश्वासी जो प्रभु के सच्चे अनुयायी हैं — वह प्रत्येक व्यक्ति जिसके विषय प्रभु कह सकते हैं, "यह मेरा शिष्य है" सम्मिलित होंगे।

आप पूछोगे "यह कैसे सम्भव है? लोग अपने शरीरों सहित कैसे आसमान में उठा लिये जायेंगे"?

यह सम्भव है यदि हम १ कुरिन्थियों १५:५१-५३ पढ़े जहां लिखा है:

"देखो मैं तुम से भेद की बात कहता हूं कि हम सब तो नहीं सोएंगे परन्तु सब बदल जायेंगे। और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे

और हम बदल जायेंगे। क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।"

तो विश्वासी जो हवा में उठा लिये जावेंगे, बदल जायेंगे— उनकी देह प्रभु की देह के समान होगी जो उनके पुनरुस्थान के बाद थी।

प्रभु अपने लोगों को क्यों उठा लेंगे?

खीष्ट के सच्चे अनुयायी क्यों हटाये जायेंगे?

उत्तर पहले ही दिया जा चुका है — कि वे उस महा विपत्ती से बचाये जायें। संसार का मैल निकालकर उसका शुद्धिकरण बाकी है। वे सब जो इस पृथ्वी पर रह जायेंगे उन पर दंडाज्ञा होगी, और उनका न्याय होगा। इस बड़े भयंकर डरावने न्याय के समय का आरंभ सन्निकट है। (यह वह अंतिम न्याय नहीं जो परमेश्वर के श्वेत सिंहासन के सामने होगा परन्तु यह वह न्याय होगा जिसमें संसार की गन्दगी दूर की जायेगी और वह शुद्ध किया जायगा। यह सात वर्ष का वह काल है जो सर्व शक्तिमान परमेश्वर के क्रोध का काल होगा।

हम कितने शीघ्र खीष्ट के आने की आशा कर सकते हैं?

ये बातें कब घटेंगीं। हमें वह वर्ष या घड़ी नहीं बताई गई परन्तु उन के आने के चिन्हों को हम देख रहे हैं और आनेवाले क्लेश की घोषणा आप के अखबारों की घटनाओं द्वारा आप रोज पढ़तें हैं। समय के विषय प्रभु ने कई लक्षण दिये हैं। उन्होंने कहा कि उनके आनेके दिन नूह के दिनों के समान होंगें।

नूह के दिनों की परिस्थितियों में तीन विशेषताएं थीं :

१) पृथ्वी भ्रष्ट थी और मनुष्यों के विचार निरन्तर विकृत व अशुद्ध थे। आज संसार भर में हम राजनीति में भ्रष्टना पाते हैं। नैतिकता में भ्रष्टता व आत्मिक भ्रष्टता भी है।

पिछले दस वर्षों में हमने संसार की नैतिक दशा का पूर्ण पतन देख लिया है और मनुष्यों के विचार और भी ज्यादा दूषित व भ्रष्ट होते जा रहे हैं। अभी हाल में एक पत्रिका में छापा गया था "यदि आप को ब्राडवें (जहां पर इग्लैंड में फिल्म बनती है) आज घृणायोग्य मालूम पड़ता है तो थोड़े दिन और रुकजाओ क्यों कि हालीवुड (अमेरिकी फिल्म केन्द्र) जो फिल्म निर्माण करने जा रही हैं उसमें उसने आप के लिये और भी बड़े धक्कों का वायदा किया है।

मनुष्य इतनी अशुद्धता व अश्लीलता की ओर झुक गये हैं कि वे अपने ही दूषित विचारों के शिकार हो गये हैं।

२) नूह के दिनों में पृथ्वी हिंसा अत्याचार व उग्रता से भरी हुई थी। यही

दशा आज भी है। वरिष्ठ सलाहकारों ने राष्ट्रपति फोर्ड को सलाह दी थी कि वे अपने दूसरे कार्यकाल के लिये, गुनाह, हिंसा व उग्रता को नियंत्रित रखने का किसी प्रकार का वायदा न करें क्योंकि यह असंभव है।

३) प्राचीन काल के युग की तीसरी विशेषता यह थी कि लोग परमेश्वर के प्रति लापरवाह थे; लोग ऐसा जीवन बिताते थे जैसे कि न्याय कभी आनेवाला ही नहीं था। वे खाने पीने व शादी व्याह में मग्न थे। ऐसी दशा आज भी है। आज भी हम शहरों का विकास कर रहे हैं व नई इमारतें बांधने में लगे हुए हैं। हम भविष्य के लिये योजना बना रहे हैं और वर्त्तमान काल में अमन चैन कर रहे हैं और यह सब कुछ करते समय हमें कभी भी ऐसा विचार नहीं आता कि इन सब का अंत आज ही हो सकता है। आप के इस संदेश पढने के दौरान भी यीशु आ सकते हैं।

परमेश्वर पापियों का न्याय करेगा

परमेश्वर के नियुक्त न्यायाधीश प्रभु यीशु शीघ्र ही स्वर्ग से जलती हुई अग्नि के साथ प्रगट होंगे और जो परमेश्वर को नहीं जानते व खीष्ट के शुभ संदेश को नही मानते उनपर विपत्ति आ पड़ेगी, वह भ्रष्टाचारियों व व्यभिचारियों का न्याय करेगा और उनका भी जो नैतिकता, धार्मिकता व शुद्धता का ढोंग करते हैं, वह घृणित व अभिमानियों का न्याय करेगा; वह करोड़पति व भिकारी का भी न्याय करेगा; वह पियक्कड़ जुआड़ी सब तरह के व्यसनों के लतबाजों का व उनका भी जिनका समाज में ऊंचा स्थान है, उन प्रतिष्ठत व प्रसिद्ध लोगों का भी न्याय करेगा; वह फिल्म निर्माता का व फिल्म देखने वाले का, शिक्षक का व विद्यार्थी का न्याय करेगा; वह धर्मी व नास्तिक, वह जो अपने स्वयं की दृष्टि में सिद्ध है और वह जो चरित्रहीन है, दोनों का न्याय करेगा।

जी हां, प्रभु यीशु खीष्ट निश्चित इस संसार की गन्दगी दूर करके उसे शुद्ध करेंगे जैसे नूह के समय जलप्रलय के द्वारा किया था, और जैसे सदोम व अमोरा के शहरों को आग और गन्धक से भस्म किया था।

आनेवाले न्याय के चिन्ह

हमारे चारों ओर चिन्ह ही चिन्ह हैं जो हमें आनेवाले न्याय की चेतावनी दे रहे हैं। अकाल भूकंप, प्रचन्ड वायु व तूफान, अनिष्ट महामारी, वायु, हवा के दूषित होने की समस्या, नशीली स्वापक चीजों का सेवन, जादू टोन्हा व भूत प्रेत विद्या में वृद्धि, जान बूझकर शैतान की उपासना, झूठे पंथ व झूठे भविष्यद्वक्ता, सत्ता व अधिकार की मुख्य स्थानों में भ्रान्ति, धोखा व गडबड़ी, यहूदी लोगों का अपने देश इस्राएल लौटकर वापिस आना, मध्यपूर्वी देशों में नित्य

चलनेवाला युद्ध, उर्जा की बिकट समस्या, विश्व व्यापी उलझी हुई अस्त व्यस्त आर्थिक दशा. एक विश्व कलीसिया, व एक विश्व शासन की आवेशी लहर जो सारे संसार में उमंड रही है। बायो केमिकल से नाश करनेवाले शस्त्र, अणु शस्त्रों व न्यूक्लियर शस्त्रों का पृथ्वी पर, समुद्र में व अन्तराल में फैल जाना, बढ़ता हुआ सैनिक खर्चा, इस्राएल देश पर आक्रमण करने व विश्वव्यापी युद्ध चलाने के लिये राष्ट्रों में बढ़ती हुई तैयारी, शस्त्रो की बिक्री का करोड़ो डालरों का व्यवसाय — ये सब प्रभु के आने के व आनेवाले क्लेश के चिन्ह हैं। मुझ से यदि सच पूछा जाय, तो मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा यदि आप तक यह पुस्तिका पहुंचने से पहले प्रभु आ जाय हो सकता कुछ वर्ष लग जायें — केवल कुछ समय की देरी है। सो आप ईश्वर से अपना हिसाब ठीक कर लीजिये और अपने प्रभु के पास उठाये जाने की तैयारी में रहिये।

अब मैं आप से एक प्रश्न पूछना चाहता हूं। आप क्या सोचते कि परमेश्वर ससार में आज होनेवाले घृणित कामों के प्रति उदासीन हैं? आप क्या सोचते परमेश्वर के ध्यान मे नहीं आता या वह क्रोध से नहीं भर जाता जब वह हमारी बढ़ती हुई गुनाह की रफ्तार को, हमारे उपद्रवो को, हमारे नशीले स्वापक वस्तुओं के व्यापार को, हमारे व्यभिचार व गर्भपात को. हमारे अश्लील साहित्य को हमारी विकृत कामुक प्रवृत्तियों को देखता है और केवल इन्ही घृणित कामों से नहीं पर आप क्या सोचते वह हमारे आप स्वार्थीपन को, हमारे लोभको, हमारे सुख विलास को, व हमारे स्वयं उसके प्रति उदासीनता को हलका समझता है?

हम कहते हैं कि हम ईश्वर में विश्वास करते हैं परन्तु कौन से ईश्वर में क्या हम पैसों की विज्ञान की, सुख विलास की या कामुकता की भक्ति करते हैं? यदि हम कहते हैं कि हम जीवते ईश्वर की सेवा करते हैं तो हम इस बात को स्वीकार करें कि परमेश्वर के पुत्र यीशु खीष्ट किसी भी दिन वापिस आ रहे हैं और कि हमे अपने जीवनों का हिसाब उन्हें देना होगा। तो आइये हम अपने सारे मन से उनकी ओर फिरें।

परमेश्वर किसी को भी बचा सक्ता है

आप इस बात को निश्चय जाने कि परमेश्वर नहीं चाहता है कि कोई नाश हो। वह नहीं चाहता है कि एक भी उस क्लेश में जाये। वह हम पर तरस खाकर बड़ी लालसा से हमारे उद्धार व भलाई के निमित्त हम से प्रेम करता है। चाहे आप पियक्कड़ हों, चाहे आप नशीली स्वापक वस्तुओं का सेवन करते हो, आप व्यभिचारणी हो या समलिंग कामुकता के पाप मे फंसे हुए हो, या चोर या

हत्यारे हों, चाहे आप जो कुछ हों या चाहे आपने कुछ भी किया हो, परमेश्वर का प्रेम आपको अपनी बाहों में समेट लेगा, यदि आप अपने पापों को छोड़कर यीशु की ओर फिर जायें।

ईश्वर ने आपके लिये अद्भूत छुटकारे का व मुक्ति का प्रबंध किया है परन्तु निर्णायक प्रश्न यह है कि क्या मैं स्वयं, जिससे प्रभु प्रेम करता व बचाने चाहता है. इस विनाश की ओर बढ़ने वाले दण्डित जग से बचकर उठा लिया जाउंगा या मैं महा क्लेश की भयानक विपत्तियों को सहने के लिये पीछे रह जाऊंगा ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये अक्सर लोग अपने आप को देखते है कि वे कितने अच्छे या बुरे हैं, उस से कोई मतलब नहीं है क्योंकि आपके गुण या दुर्गुण के कारण आप उस महान छुटकारे में भाग लेने के लिए योग्य या अयोग्य नहीं ठहरते हैं। सब कुछ केवल इस बात पर निर्भर हैं कि आप प्रभु यीशु के हैं या नहीं। परमेश्वर नहीं चाहता है कि कोई नाश हो फिर भी करोड़ों लोग महा विपत्ति मे इसलिए प्रवेश करेंगे क्योंकि वे अपनी राह से मुड़कर प्रभु यीशु की ओर नहीं फिरेंगे।

बहुत से हैं जो धोखे में है क्योंकि वे यह सोचते हैं कि वे ठीकहैं जब कि वास्तव में उनमें कोई आत्मिकता नहीं है और मैं उन सब अच्छे प्रतिष्ठित गिरजा घर जानेवाले लोगों को यह चुनौती देना चाहता हूं कि क्या आप का नया जन्म हुआ है और क्या आपके पास परमेश्वर का जीवन है ? क्या आपके हृदय में यह आश्चर्य कर्म हुआ है ? क्या सचमुच यीशु आपके प्रभु व उद्धार कर्त्ता हुए हैं ? यही सब से मुख्य बात है। क्या आप कह सकतें हैं, "जी हां, यीशु मेरे हृदय में है। मैं उससे मिलने के लिये तैयार हूं" यदि वह आज आ जाये ?

आप अपनी गिरजाघर की सदस्यता पर भरोसा न करें। आप किसी धार्मिक संस्कारों पर जिन्हें आपने पूरे किये हों, निर्भर न रहें। आप अपने पूर्वजों की परम्पराओं पर भरोसा न रखें और न इस बात पर कि आप के पिता प्रचारक थे या आपके दादा बिशप या आप का चचेरा या ममेरा भाई पादरी था। न ही आप जो पैसा परमेश्वर को देते हैं, या जो अच्छे कर्मों का प्रयत्न करते हैं या भला जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, इन में से किसी भी बात पर भरोसा न करें। परन्तु केवल अपना रोसा स्वयं यीशु पर रखें।

यदि आपने अपने जीवन का हिसाब परमेश्वर से ठीक नहीं किया है तो आप को अवश्य ठीक कर लेना चाहिये। यदि आप का जीवन, इस जग के सुख विलासों में व्यतीत हो रहा है तो आप को अवश्य दुबारा, सोचना चाहिये। यदि आप के हृदय में मूर्तिया हैं तो अच्छा होगा कि आप उन्हें निकाल कर फेंक दें। यदि आपका हृदय स्वार्थी ईर्षालु व कामुक है, या आप परमेश्वर के प्रति लापरवाह हैं या आप पैसों को या वस्तुओं को अधिक प्रेम करतें हैं या आप का मन सुख विलास भोगने में या खेल कूद या संगीत या मित्र या कोई भी अन्य बातों में परमेश्वर से अधिक लगा है तो आप को जांच कर देख लेना अवश्य है कि क्या आप सचमुच परमेश्वर के है या नहीं।

यदि आप प्रभु यीशु के आने के लिये तैयार नहीं है तो आप अभी प्रभु के सामने आकर उनसे अपना हिसाब ठीक कर लीजिए। यदि आप सच्चाई से यह नहीं कह सकते कि आप उनके सच्चे अनुयायी हैं व आपके अन्दर उनकी पवित्रता वास करती है तो आप को अभी इसी वक्त उनके पास आना होगा और अपना जीवन उन्हे समर्पित करना होगा। वे अद्‌भुत मुक्तिदाता है। वे आप के अन्दर एक अद्‌भुत कार्य करेंगे।

आप अभी यीशु से प्रार्थना में बातें करें और उन से अपने पापों के लिये क्षमा मांगे व उनसे बिन्ती करें कि वे आपको एक नया व्यक्ति बनाएं। फिर आप उन से बिनती करें कि वे आप के हृदय में आये और इस क्षण के बाद वे आप के प्रभु और मुक्तिदाता बन जायें।

वे केवल आप के लिये रुके हुए हैं कि आप अभी इसी वक्त अपनी ओर से अपना काम करें फिर वे निश्चय अपना पूरा काम करेंगे। क्या आप उन पर भरोसा करने कि वे आपको मुक्ति देंगे ? प्रभु यीशु की ओर आप फिर जाइयें और आने वाले क्रोध से बचियें।



आप का निर्णय आपके भविष्य को निश्चित करेगा।

"यहोवा (परमेश्वर) ने कहा, 'मेरा आत्मा मनुष्य से सदालों विवाद करता न रहेगा ... ...।" (उत्पत्ति ६:३)

संसार नाटक के चरम दृष्य और इस युग के अन्त में दो महा-शक्तियां मनुष्यों के मनों और आत्माओं को अपने वश में करने में लगी हैं। एक ओर शैतान की शक्तियां मनुष्यों को गुलाम बनाने में व्यस्त हैं। शैतान कोई काल्पनिक व्यक्ति नहीं वरन एक वास्तविकता है। उसका प्रमुख लक्ष्य मनुष्य को परमेश्वर-प्रदत्त उद्धार से वंचित रखना है। शैतान स्वयं अधोलोक में डाला जाएगा। उसका भविष्य यही है और वह इसे अच्छी तरह-जानता है। वह तो स्वयं परमेश्वर से बैर रखता है इस कारण जब तक समय है, वह अधिक से अधिक पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को नष्ट करना चाहता है।

दूसरी ओर हम परमेश्वर का अनुग्रहमय कार्य देखते है। वह सब लोगों को अनन्त यातना व निराशा के मार्ग से फिराना चाहता है।

यह आत्मिक युद्ध शारीरिक सामर्थ पर निर्भर नहीं है। परमेश्वर सर्व शक्तिमान् है और शैतान एक सिरजा हुआ प्राणी है। यह कनूनी युद्ध लोगों के मनों एवं आत्माओं में होता है। परमेश्वर ने मानव को स्वतन्त्र इच्छा प्रदान की है। हम उसके प्रेम – वरदान अर्थात् उसके प्रिय पुत्र प्रभु यीशु को अपनाने के लिए स्वतन्त्र है। वह प्रभु यीशु को ग्रहण करने तथा उसके साथ रहने के लिए किसी जन को विवश नहीं करेगा। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर एवं उसके पुत्र तथा उसके साथ निवास को पसन्द नहीं करता तो वह परमेश्वर के प्रबन्ध से बचने को स्वतंत्र है यद्यपि यह बचने वाले का विनाश ही होगा। परन्तु आज भी परमेश्वर लोगों से विवाद करता है :—

"परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इससे कि दुष्ट अपने मार्ग से फिर कर जीवित रहे, ... तुम अपने-अपने बुरे मार्ग से फिर जाओ, तुम क्यों मरो?" (यहेजकेल ३३:११·)

पवित्र शास्त्र बाइबिल में परमेश्वर ने अपनी योजनाको इस लिए प्रकट

किया है, ताकि हम आगामी प्रकोप को पहचान कर परमेश्वर के अनुग्रह के खोजी बनें और उसके उद्धार को प्राप्त करें।

"जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो। दुष्ट अपनी चाल-चलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़ कर यहोवा ही की ओर फिरें, वह उस पर दया करेगा। वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।"
(यशयाह ५५:६-७)

यदि आप आधुनिक सभ्यताकी बुराइयों, भ्रष्टाचार व्यभिचार और क्रूरता पर दृष्टि डालें तो आपको मालूम हो जाएगा कि संसार के न्याय का समय अति निकट है। परमेश्वर हमेशा तक मनुष्य से तर्क-वितर्क न करेगा। अभी केवल एक कारण से परमेश्वर न्याय-कार्य में देरी कर रहा है:—

"प्रभु अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने में विलम्ब नहीं करता जैसा कि कुछ लोगों का विचार है पर हमारे विषय में धीरज धरता है और नहीं चाहता कि किसी का विनाश हो, वरन् उसकी इच्छा है कि सबको हृदय परिवर्तन का अवसर मिले। प्रभु का दिन (क्लेश) चोर के सदृश आएगा।" (२ पतरस ३:९-१०)

संसार के इन अन्तिम दिनों में परमेश्वर सच्ची कलीसिया (मसीह की देह) के विश्वासियों को एकत्रित कर रहा है। शीघ्र ही "भवन भर गया" का शब्द सुनाई देगा। हाँ, शीघ्र ही मण्ड़ली पूरी हो जाएगी। पृथ्वी के सच्चे विश्वासी आकाश में प्रभु से मिलने के लिए उठाए जाएंगे। तब क्लेश-काल का आरम्भ हो जाएगा। मेरे प्रिय पाठक! इस दशा में आपका निर्णय बड़ा महत्वपूर्ण है। इस समय उद्धार कर्ता प्रभु यीशु के विषय में आपका जैसा निर्णय होगा वैसा ही आपका भविष्य। यदि आप उसे ग्रहण करेगें तो आप उन धन्य विश्वासियों के साथ 'पिता परमेश्वर के घर' में जाएंगे, अन्यथा आप इसी पृथ्वी पर रह जाएंगे, जिसका नाश निश्चत है।

यदि आप इस अनुग्रह-काल में परमेश्वर की दया को अस्वीकार करेंगे तो निश्चय है कि आप क्लेश-काल में भी प्रभु का नाम न लेगें, क्योंकि उस समय इस बहुमूल्य विश्वास का मूल्य बड़ा भारी होगा — बलिदान या कत्ल होना। इस लिए परमेश्वर चाहता है कि आप अभी उसके उद्धार को अपना लें।

"देखो यही ग्रहणका समय है यही है उद्धारका दिन"। (२ कुरि० ६:२) क्या आप यह अनुभव नहीं कर रहे हैं कि परमेश्वर अभी आप से वाद-विवाद कर रहा है? आप जानते हैं कि आप के पाप आपको बोझिल किये हुए हैं? यह अत्यावश्यक है कि आप के पाप क्षमा किये जावें। इन बातों को कल के लिए मत टालिए। क्या मालूम कल आने तक आप नरक या महा क्लेश में हों। प्रिय

जन! यह महान मूर्खता होगी यदि आप जीवन के इस सबसे महत्वपूर्ण विषय पर निर्णय न लें अर्थात अपने अनन्त भविष्य के विषय में।

सम्भवतः आप की कोई गुप्त भावनायें हों। कोई गुप्त पाप हों जिसे आप परमेश्वर की शाँति के बदले पकड़े रहना चाहते हैं। वह भावना, वह पाप, वह अभिलाषा, वह व्यक्ति या देवता, जो कुछ भी हो, आपका विनाश करेगा। यदि आप उसका त्याग न करें तो वह आपके जीवन को नष्ट कर देगा। आप को यह स्वयं मालूम है, क्योंकि आपका विवेक आप को बताता है।

अभी भी आप अपने निर्णय को टालना चाहते हैं। पहले आप कुछ और पूरा करना चाहते हैं। शायद आप सोचें कि अभी भी बहुत समय है। आप टाल रहे हैं। टालने की आदत समय को चुरा लेती है या खो देती है। इस प्रकार आप आग से खेलना चाहते हैं। यदि आग से खेलेंगे तो स्वयं भस्म हो जाएंगे। यह निश्चय जानें कि यदि अभी नहीं, तो उस श्वेत न्याय-सिंहासन के सामने अपने पापों में आप पकड़े जाएंगे।

परन्तु आपको उस सिंहासन के सम्भुख जाना या क्लेशों से गुजरना जरूरी नहीं है। अभी आप बच सकते हैं। कैसे? परमेश्वर द्वारा ठहराये गये उद्धार-कर्त्ता को स्वीकार करनें से। आप के लिए परमेश्वर की निम्नलिखित प्रतिज्ञायें हैं। क्या आप उन्हें ग्रहण करेंगे?

"यदि हम अपने पापों को अंगीकार करें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने के लिए विश्वासयोग्य और धर्मी है।" (१ यूहन्ना १:६)

परमेश्वर आप के पापों की उपेक्षा नहीं करता परन्तु विश्व का शासक होने के कारण कानूनी एवं धार्मिक रूप से उन्हें क्षमा करता है क्योंकि 'मसीह आप के पापों के बदले बलिदान हुआ'।

"क्योंकि मसीह ने भी पापों के लिए एक बार ही कष्ट सह लिया — धर्मी ने अधर्मियों के लिए कष्ट सहा कि हमें परमेश्वर के निकट लाए। वह शरीर के भाव से मारा गया पर आत्मा के भाव से जीवित किया गया।" (१ पतरस ३:१८)

वास्तव में आप को अपने पापों के लिए मरना चाहिए परन्तु यह परमेश्वर की देन है — उसने आपके बदले अपने पुत्र यीशु को मरने को भेजा।

"मनुष्य के लिए नियत है कि एक ही बार उसकी मृत्यु हो तत्पश्चात् न्याय। इसी प्रकार मसीह ने बहुतों के पाप वहन करने के लिए अपने को एक ही

बार में बलिदान कर दिया और अब उसका दूसरा आगमन ……अपनी प्रतिक्षा करने वालों के उद्धार के निमित्त होगा।" (इब्रानियो ९:२७-२८)

"जितनों ने उसको (मसीह) ग्रहण किया और उसके नाम पर विश्वास किया, उनको उसने परमेश्वर की सन्तान बनने का अधिकार दिया।" (यूहन्ना १:१२)

यहाँ पर परमेश्वर की प्रतिज्ञा है कि वह आपको अपना निजी पुत्र बनाएगा। अपने परिवार में मिला कर वास्तविक आनन्द व महिमा प्रदान करेगा।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)

परमेश्वर आपके उद्धार-प्राप्ति की गारन्टी देता है। यदि उसने आपके लिए अपने एकलौते पुत्र को दे दिया जिसने क्रूस पर भयानक दुःख सहा तो वह आपको कभी न त्यागेगा। आप केवल पूरे हृदय से, वास्तव में, उसके पुत्र प्रभु यीशु पर विश्वास कर लें तो वह अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करेगा।

"यदि तुम मुख से स्वीकार करो कि यीशु प्रभु है और हृदय से विश्वास करो कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया तो तुम्हारा उद्धार होगा।" (रोमियों १०:९)

उद्धार के विषय में पवित्र-शास्त्र मे स्पष्ट वर्णन है। यह इतना सरल कि एक बालक भी विश्वास कर सकता हैं परन्तु फिर भी अनेक लोग इस सत्य से ठोकर खाते हैं क्योंकि वे इस उद्धार को अपनी शक्ति (कर्म) से कमाना चाहते हैं।

"उसने हमारे धर्म के कामों के कारण नहीं किन्तु अपनी दया के अनुसार हमारा उद्धार किया है।" (तितुस ३:५) "परमेश्वर की दृष्टि में हमारे धर्म के काम सबके सब मैले चिथड़ी के समान हैं" (यशयाह ६४:६)

"अनुग्रह ही से विश्वास के द्वारा तुम्हार उद्धारा हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का दान है — यह कर्मों के कारण नहीं हुआ कि कोई अभिमान करे।" (इफिसियों २:८-९)

प्रभु यीशु ने कहा :— जो मेरा पिता मुझे देता है, वह सब मेरे पास आएगा और जो कोई मेरे पास आएगा उसको मैं कभी नहीं निकालूगा……जो मुझ पर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन प्राप्त है।" (यूहन्ना ६:३७,४७)

"जो पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है और जो पुत्र को नहीं मानता वह जीवन को नहीं देखेगा परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" (यूहन्ना ३:३६)

तो उद्धार पाने के लिए निम्नांकित बातें आवश्यक हैं :—

(१) अंगीकार करें कि आप पापी हैं और परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा मांगें।

(२) अपने पूरे हृदय से विश्वास करें कि परमेश्वर-पुत्र प्रभु यीशु मसीह पृथ्वी पर आया, क्रूस पर आपके पापों के बदले बलिदान हुआ और वह पुनः जीवित हो उठा और आप का उद्धार करने के हेतु जीवित है।

(३) निश्चय पूर्वक प्रभु यीशु को अपना उद्धार कर्ता, प्रभु और परमेश्वर स्वीकार करते हुए, सम्पूर्ण जीवन उसे समर्पित करें।

क्या आप इस अत्यावश्यक विषय का निपटारा अभी करेंगे? तो क्या आप निम्नलिखित सरल शब्दों में परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए प्रभु यीशु के विषय में अपना फैसला करेंगे —

"हे परमेश्वर मैं जानता हूं कि मैं एक पापी हूं। मैं आप के सम्मुख आता हूं। मेरी विनती है कि अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मेरे पापों को क्षमा करें। (प्रार्थना करते समय आप अपने विशिष्ट पापों व अपराधों के नामलेकर क्षमा मांगें) मैं विश्वास करता हूं कि आपका पुत्र प्रभु यीशु मेरे पापों के लिए सलीब पर बलिदान हुआ और उसने मेरे लिए दुःख सहा। मैं विश्वास करता हूं कि वह फिर जीवित हो उठा ताकि मेरा जीवित उद्धार कर्ता हो। सो अब मैं उसे निश्चत रूप से अपना प्रभु स्वीकार करता हूं और जीवन भर उसके पीछे चलूंगा। हे प्रभु यीशु आप मेरे हृदय व विचारों से परिचित हैं। कृपया मेरे जीवन में इसी समय आकर अपनी पूर्ण शक्ति व पवित्रता से निवास करें और मुझे अपना सच्चा शिष्य बना लें। धन्यवाद। आमीन (ऐसा ही हो)।"

हस्ताक्षर .... दिनांक ....

यदि अपने उपरोक्त निर्णय लिया है तो निम्नलिखित पते पर लिखें ताकि हम आपके लिए प्रार्थना करें और आपके इस आनन्द में हम भी सहभागी हों —

मारनाथा रिवाइवल क्रूसेड
६४–ई, सरोजिनीदेवी रोड, सिकन्दराबाद ५००००३ भारत।